गढ़वाल हिमालय में स्थित अगस्त्यमुनि आश्रम की उमा-माहेश्वर प्रतिमा : एक प्रतिमा वैज्ञानिक अध्ययन

***अभिनव तिवारी**

शोध छात्र, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, हे०न०ब० बहुगुणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड

भारतीय प्रतिमा शास्त्रीय परम्परा में शिव एवं पार्वती की संयुक्त मूर्ति के रूप में उमा-महेश्वर भी पर्याप्त लोकप्रिय था, शिव के अन्य स्वरूपों के सामान | उमा-महेश्वर प्रतिमाओं में शिव को एक ही पीठीका पर या नन्दी के पीठ पर बैठे हुए दिखलाया जाता है| पीठिका के नीचे गणेश, कार्तिकेय, भृंगी ऋषि का भी प्रदर्शन होता है| ऐसी प्रतिमा को 'हर-गौरी' प्रतिमा भी कहा जाता है|

शिव के इस उमा-माहेश्वर स्वरूप की प्रतिमा के उकेरन (निर्माण) की परम्परा कुषाण काल से मिलती है| डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल[1] ने इस तरह की पाषाण की कुषाण कालीन प्रतिमा का उल्लेख किया है| किन्तु उमा-माहेश्वर प्रतिमाओं का गुप्त काल में सर्वाधिक निर्माण हुआ एवं गुप्तकालीन निर्मित उमा-माहेश्वर प्रतिमा भारतवर्ष के अनेक स्थलों से प्राप्त होती है| गुप्तकालीन उमा-माहेश्वर प्रतिमा स्थानक एवं आसनस्थ दोनों मुद्राओं में प्रदर्शित हुई है| इसी तरह अन्य कालों में भी शिव के उमा-माहेश्वर स्वरूप की प्रतिमाओं का निर्माण होता रहा किन्तु सातवीं से लेकर तेरहवीं सदी ई० के मध्य शिव का यह उमा-महेश्वर स्वरूप अखिल भारतीय स्तर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में सर्वाधिक लोकप्रिय था|

आलिंगनबद्ध उमा-माहेश्वर की प्रतिमायें मूर्तिकला में आध्यात्मिकता का प्रतिक हैं| इस तरह की प्रतिमाओं में कामानन्द ऊपर उठाकर एक अध्यात्मिक आनन्द को प्रदर्शित किया गया/जाता है|

विवेच्य प्रतिमा उत्तराखण्ड राज्य के रुद्रप्रयाग जनपद के अगस्त्यमुनि ($30^0$23 एवं $79^0$1.25) नामक स्थान में स्थित है| जनपद मुख्यालय रुद्रप्रयाग से 20 कि०मी० दूर प्रशिद्ध हिन्दू तीर्थ केदारनाथ के मोटर मार्ग पर मन्दाकिनी नदी के बायें तट पर अगस्त्यमुनि नामक बाजार में ही स्थित है| यह स्थान प्रशिद्ध हिन्दू मुनि अगस्त्य ऋषि का घर माना जाता है, जिन्होंने यहाँ वर्षों तक तपस्या किया था| यह प्रतिमा वर्तमान में 'अगस्तेश्वर महादेव मंदिर' या 'अगस्त्यमुनि आश्रम' के एक नव निर्मित मंदिर की आन्तरिक भित्ति में

प्रतिष्ठापित करा दिया गया है| उस मंदिर के गर्भगृह में और भी अनेक देवी-देवताओं का प्रतिष्ठापन है|

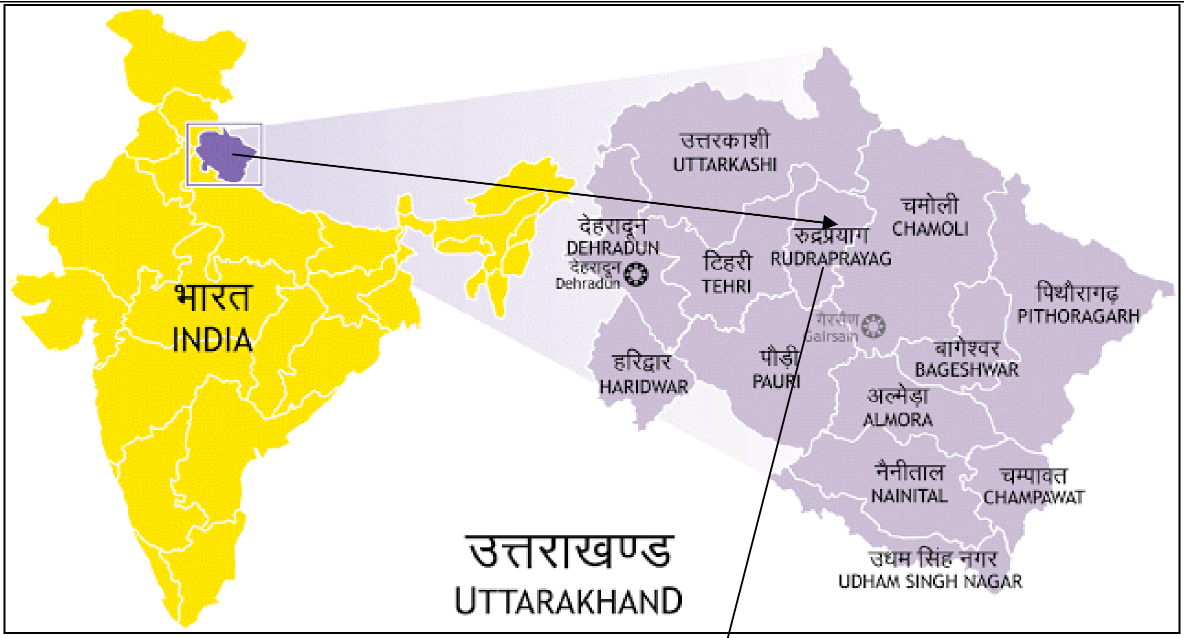

(शोध क्षेत्)

(शोध क्षेत् का उपगृहीय मानचित्)

अगस्त्यमुनि आश्रम से प्राप्त उमा-माहेश्वर प्रतिमा का स्वरुप शास्त्रीय ग्रंथों में प्राप्त विवरणों के अनुसार प्रतिमा शास्त्र की दृष्टिकोण से शिव के 'मानव रूप प्रतिमा' के अन्तरगत 'सुखासन प्रतिमा' श्रेणी में 'उमा-माहेश्वर' स्वरूप की प्रदर्शित है |

अगस्त्यमुनि से प्राप्त उमा-माहेश्वर 55*35 समी० की यह प्रतिमा हलके हरे रंग के शिष्ट प्रस्तर से निर्मित है| इस प्रतिमा में चतुर्भुजी शिव 'वाम ललितासन मुद्रा[2]' में नंदी के ऊपर बैठे हुए प्रदर्शित तथा उनके बाएं जंघा पर 'ललितासन मुद्रा' में देवी विराजमान है|

चतुर्भुजी शिव को आभामंडल रहित प्रदर्शित किया गया है| शिव के पृष्ठ दक्षिण हस्त में त्रिशूल को एवं अग्र दक्षिण हस्त में मातृलिंग फल पकड़े हुए प्रदर्शित है| शिव पृष्ठ वाम हस्त से नाग को पकड़े हुए एवं अग्र वाम हस्त उमा के पीठ की ओर से आलिंगनबद्ध होकर, उमा के बायें स्तन को स्पर्श करता हुआ प्रदर्शित हो रहा है|

उमा को द्विभुजी एवं ललितासन मुद्रा में शिव की बायें जांघ पर बैठी हुई प्रदर्शित है| उमा का दक्षिण हस्त शिव के दाहिने कंधे को पकड़े हुए हैं, वाम हस्त में दर्पण को पकड़े हुए प्रदर्शित हैं| उमा के वाम हस्त में जो दर्पण है वह शिव के चेहरे की तरफ दिखलाते हुए प्रदर्शित हो रहे हैं|

शिव को जटाजूट, कानों में कुण्डल, गले में हार, ग्रैवेयक, यज्ञोपवीत, हाथों में कंगन, भुजाओं में बाजूबंद / केयूर, कमर में कमरबंद / करधनी, पैरों में मोटा कड़ानुमा पायल, पैरों के अंगूठे में बिछुआ/ मुदरी एवं व्याघ्रचर्म या धोती धारण हुए प्रदर्शित है |

इसी तरह उमा का सवंरा हुआ केशमुकुट, मस्तक पर माथवेदी, पलको पर अलंकरण, कानों में चक्रकुण्डल/कर्नावली गले में हार एवं ग्रैवेयक, हाथों में कंगन, भुजाओं में बाजूबंद/केयूर, कमर में कमरबंद/करधनी एवं धोती पहनी हुई, पैरों में ढीला पायल, पैरों के अंगूठे में बिछुआ/मुदरी पहनी हुई प्रदर्शित है|

नंदी के ऊपर आसीन इस प्रतिमा के शीर्ष पर दाहिनी ओर विष्णुजी एवं बायें ब्रह्माजी विराजमान है| प्रतिमा के पैरों के बीच में नृत्यरत ऋषि भृंगी विद्यमान है| प्रतिमा के निचले बायें पार्श्व गणेश एवं दाहिने पार्श्व कार्तिकेय जी विद्यमान हैं| मध्य में शिला खण्ड पर दोनों तरफ एक-एक उपसिकाएं अंजलिबद्ध खड़ी प्रदर्शित है| शिव का दाहिना पैर नंदी के मुह के आगे एवं दूसरा मुड़ा हुआ बाया पैर नंदी के मस्तक स्थित है|

इस प्रतिमा में पार्वती जी शिव को निहारती हुई प्रदर्शित हो रही हैं| इस प्रतिमा में कलाकारों ने अत्यंत कुशलतापूर्वक आभूषणों का अलंकरण किया है, जिन्हें देख कर उनके कलात्मक ज्ञान का मूल्यांकन होता है| किन्तु उतनी ही बारीकी से परिकर के ऊपरी एवं निचले हिस्से के देवों का उकेरन नही किया गया| इसी तरह त्रिशूल कुछ ज्यादा ही मोटा बना दिया गया है,जिसमे अक्षमाला लिपटी हुई प्रदर्शित है| नंदी की पीठ पर बिछी हुई असीनी का दृश्यांकन भी मूर्तिकार की कार्यकुशलता का परिचायक है|

अगस्त्यमुनि से प्राप्त इस उमा-माहेश्वर प्रतिमा का विवरण शास्त्रीय ग्रंथों ‘रूपमंडन, विष्णुधर्मोत्तर पुराण एवं मत्स्य पुराण में प्राप्त होता है|

रूपमंडन[3] के अनुसार उमा-माहेश्वर की प्रतिमा के अंतर्गत शिव को चतुर्भुजी दिखाना चाहिए| उनका एक हाथ उमा के कंधे पर तथा दुसरे हाथ में सर्प प्रदर्शित होनी चाहिए, साथ में नंदी बैल, कार्तिकेय, नृत्यरत भृंगी ऋषि को भी प्रदर्शित करना चाहिए|

रूपमंडन[4] के अनुसार ‘उमा-माहेश्वर प्रतिमा में शिव को चतुर्भुज होना चाहिए| शिव का ऊपरी एवं निचले दाहिने हाथ में ‘त्रिशूल एवं मातृलिंग’ एवं ऊपरी बायें हाथ से सर्प पकड़े हुए एवं निचले बायें हाथ से उमा के पीठ की तरफ से आलिंगन करते हुए उमा के बायें कंधे पर रखा होना चाहिए| साथ में नंदी, सिंह, कार्तिकेय, गणेश, एवं दुर्बल भृंगी ऋषि आदि का भी प्रदर्शन होना चाहिए|

रूपमंडन के सदृश्य मत्स्य पुराण में भी उमा-माहेश्वर प्रतिमा के विषय में विस्तृत विवरण दिया गया है| मत्स्य पुराण[5] के अनुसार “शिव का ऊपरी एवं निचले दाहिने हाथ में त्रिशूल एवं कमल होना चाहिए| जबकी निचले बायें हाथ से पीठ की तरफ से आलिंगन करते हुए उमा के बायें स्तन को उठाये हुये या स्पर्श करते हुए प्रदर्शित होना चाहिए एवं ऊपरी बायें हाथ में सर्प पकड़े हुए हैं|

उमा शिव के बायें जांघों पर बैठी हुई प्रदर्शित होनी चाहिए एवं उनका दाहिना हाथ शिव के दाहिने कंधे पर रखा/पकड़ा होना चाहिए| जबकि उमा के बायें हाथ में कमल या दर्पण उठाया होना या पकड़ा होना चाहिए|

इस तरह से अगस्त्यमुनि आश्रम में स्थित उमा-माहेश्वर प्रतिमा में प्रतिमा शास्त्रीय ग्रंथों में रूपमंडन एवं मत्स्य पुराण में प्रदर्शित विवरणों से अत्यधिक समानता व्यक्त करती हुई प्रदर्शित है|

भारत में अनेक स्थलों से उमा-माहेश्वर इस रूप की प्रतिमा प्राप्त हुई है| जिनमें बिहार सरीफ से प्राप्त एवं वर्तमान में पटना संग्रहालय में सुरक्षित है|[6] इस प्रकार डॉ० वी०पी० सिंह[7] ने बिहार संग्रहालय में स्थित एक

अष्टधातु की उमा-माहेश्वर प्रतिमा का उल्लेख किया है| अग्रवाल[8] ने भी मथुरा की एक उमा-माहेश्वर प्रतिमा का उल्लेख किया है| एन०के० भट्टसाली[9] ने अपनी पुस्तक में रामपुर से प्राप्त अष्टधातु की उमा-माहेश्वर प्रतिमा का वर्णन किये है| खजुराहों[10], इत्यादि अनेक स्थलों से प्राप्त हुई है|

इस तरह से अगस्त्यमुनि से प्राप्त उमा-माहेश्वर की प्रतिमा का प्रतिमा शास्त्रीय लक्षणों द्वारा तुलनात्मक अध्ययनानुसार विशलेषण करने पर गढ़वाल हिमालय के प्रारम्भिक काल की प्रतिमा प्रदर्शित हो रही है, जिसमे मूर्तिकार के कलात्मक ज्ञान का प्रारम्भिक चरण देखने से महसूस हो रहा है| इस तरह इस प्रतिमा का तिथिक्रम नौवीं शताब्दी ई० में रखा जा सकता है|

सन्दर्भ सूची

अग्रवाल,वासुदेव शरण, 1987 भारतीय कला, प्रथम संस्करण(पुनर्मुद्रित),वाराणसी, पृ० 316 |

गुप्ता,एस०पी० एण्ड अस्थाना,शशि प्रभा, 2007 'एलिमेन्ट ऑफ इंडियन आर्ट इनक्लूडिंग टेम्पल आर्किटेक्चर,आईकनोग्राफी एण्ड आईकनोमेट्री (पर्सपेक्टिव ऑफ इंडियन आर्ट एण्ड आर्कियोलोजि,नॉ-04), द्वितीय संस्करण, नई दिल्ली, पृ० 141 |

रूप मंडन, 35, 16, 20 (उद्धहरण श्रीवास्तव, बृज भूषण, 2010 प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्ति-कला, पंचम संस्करण पृ० 64 |

सुरेश,के०एम०, 1998 'शैवित स्कल्पचर्स ऑफ खजुराहो', प्रथम संस्करण, नई दिल्ली, पृ० 36|

मत्स्य पुराण, अध्याय 58, वाल्युम 53, संपादक हेरू, एच०, 1865, कलकत्ता |

सिंह,वी०पी० भारतीय कला को बिहार की देन, पृ० 131, चित्र 99 |

सिंह,वी०पी० भारतीय कला को बिहार की देन, पृ० 136, चित्र 119 |

अग्रवाल,वासुदेव शरण इंडियन आर्ट, पृ० 258 |

भट्टसाली, एन०के० आईकनोग्राफी ऑफ बुद्धिस्ट एण्ड ब्रह्मनिकल स्ल्पचर इन दी डेक्का म्यूजियम, पृ० 129

सुरेश,के०एम०, 1998 'शैवित स्कल्पचर्स ऑफ खजुराहो', प्रथम संस्करण, नई दिल्ली, पृ०37-39 |

*उमा-माहेश्वर प्रतिमा, अगस्त्यमुनि (स्वत: शोधार्थी द्वारा छायांकन)

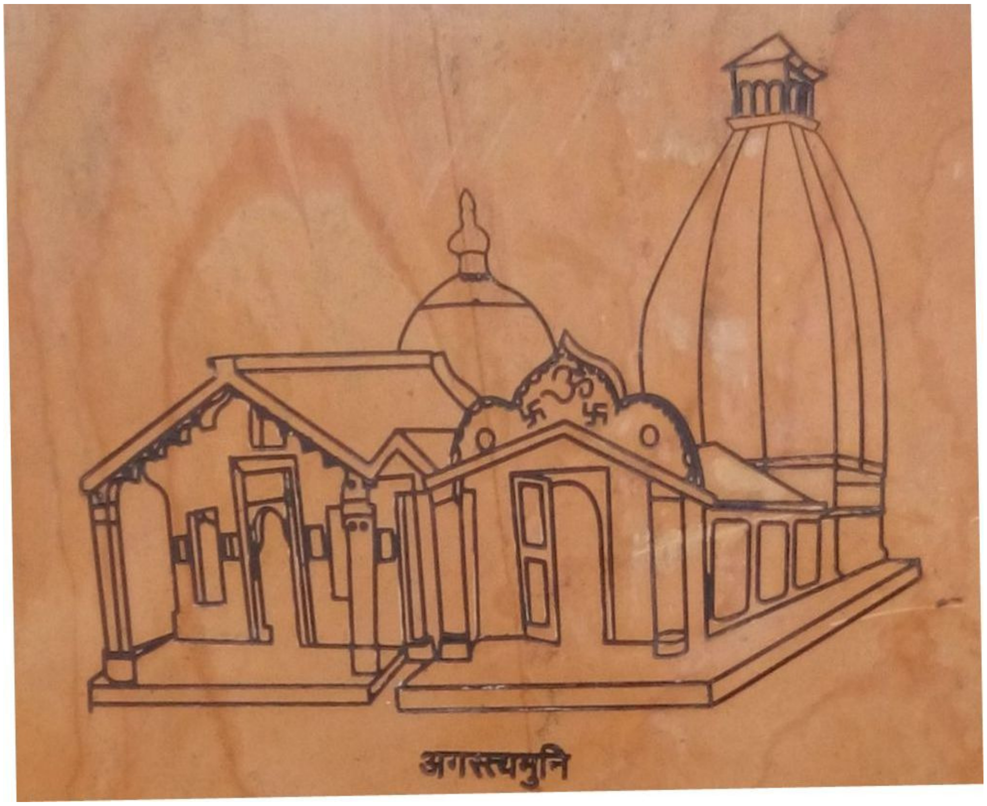

चित्र साभार : उत्तराखंड सरकार